दोहन एवं संग्रहण -

सर्पगंधा की फसल 18 महीनों में तैयार हो जाती है। अगस्त–सितम्बर माह से नवम्बर–दिसम्बर माह तक फल एकत्रित कर 1–2 घंटे पानी में भिगोकर एवं मसलकर बीज निकालना एवं सुखाना चाहिए। तत्पश्चात निकाले गये बीजों को साफ पानी से धोकर सुखाने के बाद अगली बोनी के लिए सुरक्षित अवस्था में भंडारित कर दिया जाता है। 100 बीजों का भार लगभग 3–4 ग्राम होता है। अगले वर्ष जनवरी माह में जड़ों की खुदाई कर साफ जड़ों को बोरे में भरकर सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए।

प्रसंस्करण -

जमीन से निकाली गई जड़ों में चिपके हुये अवांछित पदार्थों एवम् मिट्टी को पानी से सावधानी पूर्वक धोया जाता है, जिससे जड़ से छाल अलग न हो क्योंकि छाल में सबसे ज्यादा रासायनिक तत्व होते हैं जड़ों की साफ धुलाई के पश्चात उन्हे साफ छायादार स्वच्छ स्थान पर सुखाया जाता है ।

उत्पादन व उपज -

लगभग 25–28 क्विंटल सूखी जड़ें प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती हैं, साथ ही 40–50 किलोग्राम बीज प्राप्त होते हैं।

बाजार मूल्य -

वर्तमान में जड़ों का बाजार मूल्य 100–150 रू. प्रति किलोग्राम एवं बीजो का मूल्य 300–400 रू. प्रति किलोग्राम होता है।

अंतरवर्तीय फसलें -

सर्पगंधा 18 माह की फसल है। प्रारम्भ में इसके पौधे तेजी से नहीं बढ़ते, अतः अधिक लाभ लेने के दृष्टिकोण से सर्पगन्धा के कतारों के बीच के स्थान में सोयाबीन एवं लहसुन की फसल लगाकर किसान अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।

आय-व्यय-

सर्पगंधा की खेती करने से प्रति हेक्टेयर किसान को लगभग रू. 1.00–1.25 लाख की आय प्राप्त हो सकती है ।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

सर्पगन्धा

(*Rauvolfia serpentina*)

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी, मण्डला रोड

जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

परिचय -

सर्पगंधा एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। इसका वानस्पतिक नाम *राउल्फिया सर्पेन्टाइना* है तथा यह एपोसाइनेसी कुल का सदस्य है। मध्यप्रदेश के वनों में सर्पगन्धा का पौधा सामान्यतः बहुत कम मात्रा में, कुछ ही स्थानों पर उपलब्ध है। किन्तु औषधि निर्माण में इसकी मांग अधिक होने तथा बाजार मूल्य अधिक होने के कारण किसान इसकी खेती पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। जिससे सर्पगन्धा की खेती धीरे–धीरे सफलता की ओर अग्रसर है और मांग भी बढ़ रही है। सर्पगंधा की खेती बीजों का रोपण कर एवं पौधे लगाकर की जाती है। इसकी फसल लगभग 18–30 माह में पूर्णतः परिपक्व हो जाती है।

वानस्पतिक विवरण -

सर्पग़न्धा के पौधे की ऊँचाई एक मीटर तक होती है। तना बेलनाकार, पत्तियॉ चमकीली, एक साथ चक्र में, भालाकार, आयताकार, पर्णवृन्तयुक्त होती है। पुष्प गुच्छों में श्वेत–गुलाबी रंग के होते हैं। पुष्प अप्रैल से नवम्बर माह तक खिलते हैं। बीज गोलाकार, गुलाबी, कत्थई एवं परिपक्व अवस्था में काले रंग के होते हैं ।

भौगोलिक विवरण

यह हिमालय की तलहटी से लेकर बंगाल व आसाम, मेघालय की सीमा, झारखण्ड, तमिलनाडु, केरल के. दक्षिण–पश्चिम भाग से लेकर, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तक प्राकृतिक रूप में प्रचुरता से मिलता है। भारत के अतिरिक्त यह पौधा पाकिस्तान, श्रीलंका, चीन, जापान देशों में भी पाया जाता है ।

औषधीय उपयोग -

इसकी जड़ों में औषधीय गुण पाये जाते हैं। इसकी जड़ें पित्त नाशक एवं ज्वरघ्न होती है। यह रक्तचाप कम करने, स्त्रियों के रोग में, पागलपन दूर करने, अनिद्रा, बुखार आदि में उपयोग होता है। इसके पत्तों का रस आँख के कार्निया के इलाज में उपयुक्त होता है। इस जड़ का उपयोग आंत रोग, हैजा, पुराना बुखार एवम् जल्दी प्रसव आदि में किया जाता है।

सक्रिय घटक -

इसकी जड़ों में 1.7 – 3.0 प्रतिशत तक एल्केलाइड्स पाये जाते हैं, जिनमें रिसर्पिन, एजामेलिन तथा सर्पेन्टिन प्रमुख है। इसके अतिरिक्त स्टार्च, गोंद लवण भी पाये जाते हैं ।

भूमि व जलवायु -

खेती के लिए बलुई, दोमट या काली मिट्टी जिसका पी.एच. 6–8.5 हो, उपयुक्त होती है।

कृषि तकनीक -

खेती की तैयारी – खेत की दो–तीन बार गर्मियों में जुताई करके लगभग 15–20 टन गोबर खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना चाहिए। खेत में कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. तक होना चाहिए। पाटा चलाकर खेत समतल कर तथा उचित जल निकास का प्रबंध कर लेना चाहिए ।

प्रवर्धन -

सामान्यतः सर्पगन्धा का प्रवर्धन बीजों द्वारा किया जाता है परन्तु इसका प्रवर्धन तने की कलम व जड़ों (Root suckers) द्वारा भी किया जा सकता है ।

बुआई -

बीजों को बुआई के पूर्व 24 घण्टे पानी में भिगोने के पश्चात् 2–3 ग्राम थाइरम प्रति किलोग्राम की दर से बीजों को उपचारित करना चाहिए। एक हेक्टेयर के लिए लगभग 4–6 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुआई का कार्य 25 अप्रैल से 10 मई तक कर लेना चाहिए। पौध से पौध की दूरी 45 से.मी. रखनी चाहिए । पौधों को जुलाई के प्रथम सप्ताह में रोपित करना चाहिए ।

उर्वरक -

रोपण के समय 50 ग्रा. प्रति पौधा वर्मी कम्पोस्ट डालने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते है । गोबर की खाद सर्वाधिक उपयुक्त होती है। उर्वरक का एक तिहाई भाग रोपण के समय एवं शेष दो भाग छः–छः माह के अन्तराल में देना उचित होगा ।

निदाई-गुड़ाई एवं सिंचाई -

प्रथम वर्ष लगभग 3–4 बार एवम दूसरे वर्ष 2–3 बार निदाई–गुड़ाई करना आवश्यक है। गर्मियों में 2–3 बार एवं सर्दियों में 1 से 2 बार माह में सिंचाई करना चाहिए।

रोग व रोगदाई रोग व रोकथाम -

पत्तियों पर फफूँद की सफेद परत होने पर डायथेन एम–45 ई.सी. के 0.05 प्रतिशत घोल का प्रयोग करना चाहिए। डाईबेक रोग होने पर डाईथेन –जेड 78 का 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।